UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 7.0 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 15, No. 2 Year - 15 February, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

अनुक्रमणिका

❖	प्रेमचंद और दलित–विमर्श **डॉ० एस0बी0एन0 तिवारी**	1-4
❖	Micro Finance as a Financing Tools for Micro Enterprises **Tapas Ranjan Roy**	5-10
❖	भाषा का जैविक व सामाजिक आधार **डॉ0 तस्मीना हुसैन**	11-14
❖	मूल्यों का नवप्रवर्तन : भारत में नैतिक प्रगति में समाचार मीडिया प्रकटीकरण और संचार की भूमिका की खोज **नेहा अनमोल जावळे**	15-17
❖	धनबाद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की रूचि का अध्ययन (सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में) **विजय कुमार राम**	18-20
❖	सृजन के फूल **डॉ0 प्रमोद कुमार पाण्डेय**	21-25
❖	भारत में दिव्यांग व्यक्तियों के संवैधानिक एवं सरकारी योजनाएँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्यामकली**	26-32
❖	उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन **डॉ0 शिवम सक्सेना, मोहम्मद आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	33-36
❖	कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना के स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन **महेश चंद जाटव, नितेन्द्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	37-38
❖	सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के स्तर का अध्ययन **विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 शशि मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	39-41
❖	विद्यालयों में शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों का दण्ड के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन **जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	42-44
❖	राजस्थान के फड़ चित्रों की लोकप्रियता **स्मिता जायसवाल एवं डॉ0 जया जैन**	45-48
❖	मानवेंद्र नाथ राय की नव मानववाद एवं वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता **विकाश कुमार निराला**	49-52
❖	बुद्ध युग में शिक्षक शिक्षा एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता **डॉ0 राजन कुमार त्रिपाठी**	53-55
❖	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों में मानसिक परिवर्तन एवं सीखने में परिवर्तन का अध्ययन **श्रीमती मुकेशी बाई मीना, श्रीमती पिंकेश मुद्गल एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	56-58

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 7.0
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 15, No. 2, February 2024 ISSN : 0976-6650

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ0 शिवम सक्सेना
सहायक आचार्य, वीणा मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली
मोहम्मद आरिफ
सहायक आचार्य, वीणा मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली
डॉ0 मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, वीणा मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली

सारांश

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है तथा अनुभवों के द्वारा हमारे व्यवहार में जो भी परिवर्तन आते हैं वह शिक्षा के फलस्वरुप ही आते हैं। शिक्षक छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु हर संभव प्रयास करता है इस प्रकार शिक्षा में शिक्षक की भूमिका अद्वितीय है किंतु वर्तमान उच्च जीवन स्तर को देखते हुए शिक्षक भी अधिक से अधिक धन का अर्जन कर अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करना चाहते हैं अतः सामाजिक बुराइयों का असर उन पर भी पडना स्वाभाविक ही है।

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया। जनसंख्या में से यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा दर्श के रूप में 200 विद्यार्थियों को रखा गया। न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए बालक बालिका को रखा गया। शोध उपकरण के रूप में स्वः निर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया जिसमें स्वः निर्मित 34 कथन है एवं तीन बिंदु मापनी का उपयोग किया गया है जिसमें सहमत, असहमत तथा अनिश्चित तीन बिंदु चयन के लिए हैं आंकड़ों के संख्या विश्लेषण हेतु "काई वर्ग परीक्षण" का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष–1 अर्थात "कोचिंग संस्थाएं माध्यमिक व उच्च माध्यमिक के विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त होता है" के प्रति अधिकांश 60: विद्यार्थी सकारात्मक सोच रखते हैं तथा लड़कियों की अपेक्षा लड़के इस कथन के प्रति अधिक सकारात्मक सोच रखते हैं

निष्कर्ष–2 अर्थात "कोचिंग संस्थानों में कमजोर छात्रों के लिए विशेष प्रयोगात्मक कक्षाएं आयोजित की जाती हैं" के प्रति अधिकांश 45.5 विद्यार्थी असहमत हैं तथा लड़कों की अपेक्षा लड़कियों इस कथन के प्रति अधिक नकारात्मक सोच रखती हैं।

शोध समस्या की पृष्ठभूमि

प्रस्तावना– शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है तथा अनुभवों के द्वारा हमारे व्यवहार में जो भी परिवर्तन आते हैं वे शिक्षा के फल स्वरुप ही आते हैं।

समाज के सभी व्यक्ति वह चाहे किसी भी धर्म या समुदाय के हो अपने बच्चों को शिक्षित करना चाहते हैं इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह अपने बच्चों का प्रवेश विद्यालयों महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय में करवाते हैं परंतु वर्तमान समय में शिक्षा के मूल्यों में निरंतर गिरावट देखने को मिलती है। प्राचीन काल में जो आध्यात्मिक मूल्य हमारी शिक्षा व्यवस्था में विद्यमान थे गुरु की आज्ञा, गुरु की सेवा को ही शिष्य अपना सर्वोच्च धर्म मानते थे उनका स्थान आज भौतिक मूल्यों ने ले लिया है जिसके पास धन है वह विद्यार्थी ही अध्ययन कर सकता है या उसके माता–पिता, अभिभावक उसे पढ़ा सकते हैं जिसके फल स्वरुप छात्रों एवं अध्यापकों में असंतोष बढ़ रहा है इसके मूल में दोनों समाज की बदली हुई आर्थिक व भौतिक परिस्थितियां हैं इसके बावजूद शिक्षा की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाला अध्यापक समाज की आलोचनाओं एवं व्यंग्यों से पलायन नहीं कर सकता। वर्तमान समय में अध्यापक अपनी लोकप्रियता खोते जा रहे हैं जिससे उनका स्तर समाज के मध्य गिर रहा है शिक्षक छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु हर संभव प्रयास करता है इस प्रकार शिक्षा में शिक्षक की भूमिका अद्वितीय है किंतु वर्तमान उच्च जीवन स्तर को देखते हुए शिक्षक भी अधिक से अधिक धन का अर्जन कर अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करना चाहते हैं अतः सामाजिक बुराइयों का असर उन पर भी पढ़ना स्वाभाविक ही है इस प्रकार शिक्षक विचलित होकर अपने उच्च आदर्शों का त्याग कर देते हैं एवं कोचिंग संस्थानों में अध्यापन हेतु उन्मुख हो जाते हैं क्योंकि शिक्षक भी एक सामाजिक प्राणी है और वह सामाजिक प्राणी होने के कारण अपने सामाजिक कर्तव्यों को पूरी लगन व

ईमानदारी से वहन करता है और विद्यालय में अध्यापन के साथ–साथ कोचिंग संस्थानों में भी कार्य करना आरंभ कर देते हैं।

शोध समस्या का औचित्य

प्राचीन काल में गुरु, अध्यापक अपने अध्यापन द्वारा अच्छे नागरिकों एवं अच्छे शासको का निर्माण किया करते थे एवं अपने कार्य के प्रति पूर्ण समर्पित रहते थे सांसारिक सुखों से उनका कोई लेना देना नहीं था। सामाजिक व्यवस्था में उनका सर्वोच्च स्थान था। उनके वचन ज्ञान से परिपूर्ण होते थे परंतु समय में परिवर्तन के कारण अध्यापकों की स्थिति एवं भूमिका में भी परिवर्तन हुआ है पहले नौकरी योग्यता के आधार पर प्राप्त हो जाती थी जनसंख्या वृद्धि के कारण नौकरी सरलता से प्राप्त नहीं हो पाती है साथ ही व्यावसायिक शिक्षा का स्वरूप भी शिक्षण क्षेत्र में आ गया है वर्तमान समय में व्यक्ति इस आदर्श व्यवस्था को अंतिम वरीयता दे रहे हैं अतः वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन श्रद्धापूर्वक नहीं कर पा रहे हैं।

मानव अभिवृत्ति तथा मानव मूल्यों में होने वाली गिरावटों के लिए केवल शिक्षा व्यवस्था को ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता इसमें समाज एवं शिक्षा प्रदान करने वाले भी बराबर की भूमिका निभा रहे हैं। कोचिंग संस्थानों का यह इतिहास अधिक पुराना नहीं है लगभग चार दशक पूर्व से प्रारंभ हुए इस धंधे का विस्तार महानगरों से होता हुआ छोटे नगरों, कस्बों में भी हो चुका है आकर्षक विज्ञापनों के साथ अनवरत प्रगति की ओर बढ़ने वाले कोचिंग संस्थान लाखों शिक्षा प्रेमियों को अपने भ्रम जाल में फंसा कर छात्रों के भविष्य के साथ मजाक तो कर ही रहे हैं एवं देश की आदर्श शिक्षा परंपरा पर भी कुठाराघाट कर रहे हैं ऐसी स्थिति में कोचिंग शिक्षण संस्थाओं द्वारा छात्रों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने की आवश्यकता प्रतीत होती है जिससे की विशेष तौर पर उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों के कोचिंग के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन किया जा सके।

शोध अध्ययन का शीर्षक

"उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।"

शोध समस्या के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य अभिवृत्ति मापने के द्वारा विद्यार्थियों का कोचिंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है

- विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिरूचि का पता लगाना।
- कमजोर छात्रों के लिए कोचिंग की उपयोगिता का पता लगाना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

किसी भी समस्या को भली भांति समझने (सिद्ध) करने के लिए परिकल्पनाओं का सहारा लिया जाता है इसलिए प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है:–

- छात्र–छात्राओं की कोचिंग के प्रति अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है।
- कोचिंग की प्रयोगात्मक कक्षाऐं कमजोर छात्रों के लिए सार्थक नही होती हैं।

तकनीकी पदों की कियात्मक परिभाषाएं

कोचिंग संस्थान

कोचिंग शब्द अंग्रेजी के (Coach) से बना है जिसका अर्थ है प्रशिक्षित करना या पढाना। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि किसी विशेष उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को निर्देशन परामर्श या प्रशिक्षण देकर अभ्यास करना एवं प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना ही कोचिंग संस्थानों का ध्येय होता हैं।

अभिवृत्ति

अभिवृत्ति एक मनोसामाजिक प्रत्यय है जो विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार में प्रदर्शित होता है यह व्यक्ति के मनोभावों और विश्वास की ओर इशारा करता है अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति के उसे दृष्टिकोण से है जिसके कारण वह किन्हीं वस्तुओं व्यक्तियों संस्थाओं परिस्थितियों या योजनाओं के बारे में किसी विशेष प्रकार का व्यवहार प्रदर्शित करता है अभिवृत्ति को उत्पन्न करने में ज्ञानात्मक भावात्मक राजनीतिक आर्थिक सामाजिक कारण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शोध अध्ययन का प्रारूप

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया। जनसंख्या में से यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा दर्श के रूप में 200 विद्यार्थियों को रखा गया। दर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए बालक–बालिका को रखा गया शोध उपकरण के रूप में स्व निर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया जिसमें स्व निर्मित 34 कथन

है एवं तीन बिंदु मापनी का उपयोग किया गया है जिसमें सहमत, असहमत तथा अनिश्चित तीन बिंदु चयन के लिए हैं आंकड़ों के संख्या विश्लेषण हेतु "काई वर्ग परीक्षण" का प्रयोग किया गया।

शोध अध्ययन का सांख्यिकीय विश्लेषण

सारणी–1 : कोचिंग के प्रति माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरूचि से संबंधित आंकड़े

समूह		प्रतिक्रिया वर्ग			योग	X^2	.01 सार्थकता स्तर
		सहमत	असहमत	अनिश्चित			
लडके	fo	66	24	10	100	3.6	सार्थक नहीं है
	fe	60	30	10			
	%	66%	24%	10%			
लडकियां	fo	54	36	10	100		
	fe	60	30	10			
	%	54%	36%	10%			
कुल		120	60	20	200		
		60%	30%	10%			

व्याख्या– परिगणित काई वर्ग का मान 3.6 है जो कि 2 df पर .01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 9.210 से कम है अतः यह मान सार्थक नहीं है इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है अर्थात "कोचिंग संस्थाएं माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक के विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त होता है" के संबंध में लड़के और लड़कियों में सार्थक अंतर नहीं है।

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि इस कथन के सन्दर्भ में कुल 60 प्रतिशत ने सहमत तथा 30 प्रतिशत विद्यार्थियों ने असहमत के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की है लड़कों ने सहमत के प्रति 66 प्रतिशत तथा असहमत के प्रति 24 प्रतिशत प्रतिक्रिया व्यक्त की है जबकि लड़कियों ने सहमत के प्रति 54 प्रतिशत तथा सहमत के प्रति 36 प्रतिशत प्रतिक्रिया व्यक्त की है

सारिणी–2 : कोचिंग संस्थानों की कमजोर छात्रों के लिए विशेष प्रयोगात्मक कक्षाओं की उपयोगिता से संबंधित आंकड़े

समूह		प्रतिक्रिया वर्ग			योग	X^2	.01 सार्थकता स्तर
		सहमत	असहमत	अनिश्चित			
लडके	fo	40	44	16	100	.3654	सार्थक नहीं है
	fe	39	44.5	16.5			
	%	40%	44%	16%			
लडकियां	fo	38	45	17	100		
	fe	39	44.5	16.5			
	%	38%	45%	17%			
कुल		78	89	33	200		
		39%	44.5%	16.5%			

व्याख्या– परिगणित काई वर्ग का मान .3654 है जो कि 2 df पर .01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 9.210 से कम है अतः यह मन सार्थक नहीं है इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। अर्थात "कोचिंग संस्थानों में कमजोर छात्रों के लिए विशेष प्रयोगात्मक कक्षाएं आयोजित की जाती हैं" के संबंध में लड़के और लड़कियों में सार्थक अंतर नहीं है।

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि इस कथन संख्या–2 के प्रति कुल 39 प्रतिशत ने सहमत तथा 44.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने असहमत प्रतिक्रिया व्यक्त की है लड़कों ने सहमत के प्रति 40 प्रतिशत तथा असहमत के प्रति 44 प्रतिशत प्रतिक्रिया व्यक्त की है जबकि लड़कियों ने सहमत के प्रति 38 प्रतिशत तथा असहमत के प्रति 45 प्रतिशत प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

शोध अध्ययन समस्या निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष–1

कथन संख्या–1 अर्थात "कोचिंग संस्थाएं माध्यमिक व उच्च माध्यमिक के विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त होता है" के प्रति अधिकांश 60 प्रतिशत विद्यार्थी सकारात्मक सोच रखते हैं तथा लड़कियों की अपेक्षा लड़के इस कथन के प्रति अधिक सकारात्मक सोच रखते हैं।

कथन संख्या–2 अर्थात "कोचिंग संस्थानों में कमजोर छात्रों के लिए विशेष प्रयोगात्मक कक्षाएं आयोजित की जाती हैं" के प्रति अधिकांश 44.5 प्रतिशत विद्यार्थी असहमत हैं तथा लड़कों की अपेक्षा लड़कियों इस कथन के प्रति अधिक नकारात्मक सोच रखती हैं।

निष्कर्ष–2

कथन संख्या–1 मापनी का एक प्रमुख प्रश्न है जिसके प्रति 60 प्रतिशत विद्यार्थी सहमति व्यक्त करते हैं इसका तात्पर्य यह है कि माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए कोचिंग में अध्ययन करना आवश्यक है कथन यह भी संकेत कर रहा है कि विद्यालयों में इन स्तरों पर उचित शिक्षा प्रदान की जा रही है।

कथन संख्या–2 के प्रति हालांकि मिली जुली प्रतिक्रिया है फिर भी अधिकांश विद्यार्थी यह मानते हैं की कोचिंग संस्थानों में कमजोर छात्रों के लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं की जाती है अतः विद्यालय के अध्यापकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वैसे छात्रों के लिए विशेष व्यवस्था सुनिश्चित करें।

सुझाव

- इस प्रकार का शोध स्नातक स्तर पर बी.ए.,बी.एस.सी. तथा बी.कॉम के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
- इस प्रकार का शोध विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
- इस प्रकार का अध्ययन कोचिंग में पढ़ने वाले विद्यार्थियों तथा कोचिंग में ना पढ़ने वाले विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. अदावल, एस.बी. क्वालिटी ऑफ टीचर्स, इलाहबाद, अभिनव प्रकाशन, 1979.
2. गौरेट, एच.ई. शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, बॉम्बे वकील–फेफर एण्ड सीमन्स लि. 1981.
3. राय, पी.एन. अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल।
4. शुक्ला, पी.एन., एन.इन्वेस्टीगेशन इन्टू दा रोल ऑफ प्राईवेट कोचिंग इंसटीट्यूट्स फॉर इंटरमीडिएट स्टूडेंटस, अप्रकाशित, एम.एड. लघु शोध प्रबंध, इ.वि.वि. 1982.